मिशन शिक्षण संवाद

पाठ्यक्रम पर आधारित रूचिपूर्ण, शैक्षिक
एवं उपयोगी मधुर गीतों का संग्रह

गीतांजलि सृजन

अंक- 20 **माह- जुलाई 2024**

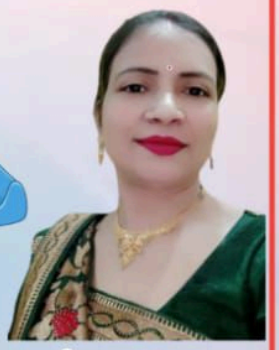

#9458278429

गीतकार -
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा (प्रथम)
अमरौधा, कानपुर देहात

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन टीम

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 5 पाठ- 13 (विज्ञान युगम भाग- 1)

तर्ज- - क्या मौसम आया है।
गीत- विज्ञान का युग आया है।

491

विज्ञान का युग

विज्ञान का युग आया है,
जीवन में खुशियाँ लाया है..2

हर जगह बदलाव की बयार है चली,
उन्नति से महकी है देखो गली-गली।
विज्ञान खोल दिए हैं,
उन्नति के ढेरों नये अवसर।।
सुखमय हो गया जीवन,
बदलाव है घर-घर।

विज्ञान का युग आया है,
जीवन में...2

विज्ञान के चमत्कार से,
सारा जहांन है रोशन।
टी० वी० इण्टनेट से सबका,
हो रहा मनोरंजन।।

पल भर में अपनों का,
हाल मालूम कर पाते।
विज्ञान के अविष्कार से,
हम जीवन में ये सुविधाएँ
पाते।।

विज्ञान का युग आया है
जीवन में खुशियाँ...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 5 पाठ- 13 (विज्ञान युगम भाग- 2)

492

तर्ज- - क्या मौसम आया है।
गीत- विज्ञान का युग आया है।

विज्ञान का युग

विज्ञान का युग आया है,
जीवन में खुशियाँ लाया है..2

देश-विदेश की खबरें,
हमें तुरंत मिल जाती।
यह सारी सुख-सुविधाएँ,
जीवन को आसान बनाती।।

विज्ञान का युग आया है,
जीवन में...2

वायुयान ने लम्बी दूरी को,
कम करके दिखाया है।
नये-नये आविष्कारों से,
संसार मे परिवर्तन आया है।।

विज्ञान का युग आया है
जीवन में खुशियाँ...2

इनवर्टर,ए० सी० टी०वी०,
सभी विज्ञान से पाये हैं।
चंद्रमा की धरती को भी,
हम रॉकेट से छू आये हैं।।
विज्ञान के प्रभाव,
सभी जगह छाये हैं।।

विज्ञान का युग आया है
जीवन में खुशियाँ...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 5 पाठ- 11 (चिड़िया का घोंसला भाग- 1)

493

तर्ज- चाहा है तुझको चाहेंगे हरदम
गीत- सौम्या के घर में आती

चिड़िया का घोंसला

सौम्या के घर में आती एक चिड़िया है।
चींचीं करके खुशियाँ लाती चिड़िया है..2

चिड़िया जब आती है,
चोंच में सूखे तिनके लाती है।
घर के आँगन में तिनकों से,
वो अपना घोंसला बनाती है।।

प्यारी चिड़िया छोटी सी,
शोर मचाती है।
तिनका तिनका जोड़ के,
सुन्दर घोंसला बनाती है।।

सौम्या के घर में आती एक चिड़िया है।
चींचीं करके खुशियाँ लाती..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 5 पाठ- 11 (चिड़िया का घोंसला भाग- 2)

494

तर्ज- चाहा है तुझको चाहेंगे हरदम
गीत- सौम्या के घर में आती

चिड़िया का घोंसला

सौम्या के घर में आती एक चिड़िया है।
चींचीं करके खुशियाँ लाती चिड़िया है..2

सौम्या भी चिड़िया को,
प्रतिदिन दाना पानी देती है।
प्यारी चिड़िया अपनी चहक से,
घर में खुशियाँ भर देती है।।

चिड़िया की प्यारी आवाज,
सबके मन को भाती है।
चिड़िया के आने से घर-आँगन में
रौनक छा जाती है।।

सौम्या के घर में आती एक चिड़िया है।
चींचीं करके खुशियाँ लाती..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 5 पाठ- 11 (चिड़िया का घोंसला भाग- 3)

495

तर्ज- चाहा है तुझको चाहेंगे हरदम
गीत- सौम्या के घर में आती

चिड़िया का घोंसला

सौम्या के घर में आती एक चिड़िया है।
चींचीं करके खुशियाँ लाती चिड़िया है..2

तभी घर के आँगन में,
एक कौआ आ जाता है।
चिड़िया के अण्डों को वो,
खाने को ललचाता है।।

कौवे को देख कर,
चिड़िया घबरा जाती है।
सौम्या भी तुरंत कौवे को,
वहाँ से भागती है।

अण्डों की रक्षा कर सौम्या,
अपना फर्ज निभाती है।
चिड़िया भी खुश होकर के,
गीत गुनगुनाती है।
घर के आँगन में देखो,
रौनक जाती है।।

सौम्या के घर में आती एक चिड़िया है।
चींचीं करके खुशियाँ लाती..2

सौम्या के घर में आती एक चिड़िया है।
चींचीं करके खुशियाँ लाती..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलम (हिन्दी)

कक्षा- 2 पाठ- 05 (टपका का डर भाग- 1)

496

तर्ज- लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है
गीत- बरसात मे पानी टपकने

टपका का डर

बरसात में पानी बरसने 'लगा था,
दादी माँ का छप्पर भी टपकने लगा था...2

तभी जोरों से ओले गिरने लगे थे,
ओलों की मार से सभी डरने लगे थे।
कहीं जंगल से एक बाघ आया वहाँ पर,
पहुँच गया दादी का छप्पर था जहाँ पर।।

बरसात में पानी बरसने लगा था,
दादी माँ का छप्पर भी टपकने लगा था...2

बाघ चुपचाप पानी रुकने का,
इन्तजार कर रहा था।
दादी माँ की भी बातें छिपकर,
चुप-चाप सुन रहा था।।

बरसात में पानी बरसने लगा था,
दादी माँ का छप्पर भी टपकने लगा था...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलम (हिन्दी)

कक्षा- 2 पाठ- 05 (टपका का डर भाग- 2)

497

तर्ज- लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है

गीत- बरसात मे पानी टपकने

टपका का डर

बरसात में पानी बरसने 'लगा था,
दादी माँ का छप्पर भी टपकने लगा था...2

दादी माँ छप्पर के नीचे,
चूल्हे पर भात पका रहीं थी।
टपका के डर से दादी माँ,
अब घबरा रहीं थी।।

बरसात में पानी बरसने लगा था,
दादी माँ का छप्पर भी टपकने लगा था...2

अब धीरे-धीरे चूल्हे पर भी,
पानी टपकने लगा था।
गुस्से में दादी माँ का मन,
जोरों से झुंझला रहा था।।

बरसात में पानी बरसने लगा था
दादी माँ का छप्पर भी टपकने लगा था...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलम (हिन्दी)

कक्षा- 2 पाठ- 05 (टपका का डर भाग- 3)

498

तर्ज- लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है

गीत- बरसात मे पानी टपकने लगा था

टपका का डर

बरसात में पानी बरसने 'लगा था
दादी माँ का छप्पर भी टपकने लगा था...2

दादी मां बोली मुझको,
टपका से डरा लगता बहुत है।
बाघ से भी उतना डर,
अब मुझे लगता नहीं है।।

बरसात में पानी बरसने लगा था
दादी माँ का छप्पर भी टपकने लगा था...2

टपका है कोई बड़ा जानवर,
सोचकर बाघ भी डर गया था।
टपका से बचने के लिए तेजी से,
जंगल की ओर भाग गया था।।

बरसात में पानी बरसने लगा था
दादी माँ का छप्पर भी टपकने लगा था...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलम (हिन्दी)
कक्षा- 02 पाठ- 06 (ममता का घर भाग- 1)
तर्ज- साजन मेर उस पार है।
गीत- माना वाला ममता का गाँव है।

499

ममता का घर

माना वाला ममता का गाँव है,
सुन्दर वहाँ पेड़ों की छाँव ..2

ममता का घर गाँव में,
मिट्टी से बना कच्चा है।
घर की दीवारों पर घास-फूस का,
छप्पर बड़ा अच्छा है।।

घर के चारों बड़ी सी एक दालान है,
पेड़ों पर लगे वहाँ ढेरों आम हैं।

माना वाला ममता का गाँव है,
सुन्दर वहाँ पेड़ों की छाँव ..2

ममता और मगन सुबह,
जल्दी उठ जाते हैं।
फिर दाँतो को साफ करके,
नियमित नहाते हैं।।

माँ सबके लिए नाश्ता तैयार करती है
जीवन में खुशियों के रंग भरती है।।

माना वाला ममता का गाँव है,
सुन्दर वहाँ पेड़ों की छाँव ..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलम (हिन्दी)

कक्षा- 02 पाठ- 06 (ममता का घर भाग- 2)

500

तर्ज- साजन मेर उस पार है।

गीत- माना वाला ममता का गाँव है।

ममता का गाँव

माना वाला ममता का गाँव है,
सुन्दर वहाँ पेड़ों की छाँव ..2

ममता के भाई ने पेड़ों के पर,
झूला डाला डाला है।
आम के पेड़ों का बाग,
वहाँ बड़ा निराला है।।

माँ ने घर के काम काज,
को अच्छे से सम्भाला है।
ममता और भाई मगन को,
बड़े प्यार से पाला है।।

माना वाला ममता का गाँव है,
सुन्दर वहाँ पेड़ों की छाँव ..2

ममता और मगन तैयार होकर,
स्कूल पढ़ने जाते हैं।
घर वापस आकर हाथ मुँह धोकर,
दोनों खाना खाते हैं।।

प्यारा उनका छोटा परिवार है,
भाई बहिन दोनों मे अटूट प्यार है।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलम (हिन्दी)

कक्षा- 02 पाठ- 06 (ममता का घर भाग- 3)

501

तर्ज- साजन मेर उस पार है।

गीत- माना वाला ममता का गाँव है।

ममता का गाँव

माना वाला ममता का गाँव है,
सुन्दर वहाँ पेड़ों की छाँव ..2

माँ को घर पर जब ज्यादा काम होते हैं,
खाना तब बाबूजी बनाते हैं।
दाल-चावल रोटी और तरकारी,
सभी मिल-जुल कर खाते हैं।।

ममता और मगन बगिया से,
ताजी सब्जियाँ तोड़कर लाते हैं।
फिर उनको धोकर हम,
सब प्रेम से खाते हैं।

बाबूजी जब खेतों से घर आते हैं,
आकर बैलों को चारा खिलाते हैं।
शाम को सब साथ बैठ जाते हैं,
मिलकर फिर सभी खाना खाते हैं।।

माना वाला ममता का गाँव है,
सुन्दर वहाँ पेड़ों की छाँव ..2

दादी माँ हमें कहानियाँ सुनाती है,
सुनकर हम दोनों को नींद आ जाती है।

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध

कक्षा- 5 पाठ- 01 (वन्दे सदा स्वदेशम् भाग- 1)

तर्ज- - बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम

गीत- करते हैं वन्दना स्वदेश की हम

502

स्वदेश वन्दना

करते हैं वन्दना स्वदेश कि हम,
करेंगे सदा रक्षा अपने देश की हम...2

गंगा नदी की जलधारा,
देश को पावन है करती।
नर्मदा नदी भी भारत के,
मध्य भाग में बहती।।
मिलती सदा यहाँ प्रकृति में भिन्नताएँ,

करते हैं वन्दना स्वदेश कि हम,
करेंगे सदा रक्षा अपने देश की हम...2

उत्तर दिशा मे हिमालय,
भारत का मुकुट है सजाता।
दक्षिण भारत के चरणों में,
सागर है लहराता।।

करते हैं वन्दना स्वदेश कि हम,
करेंगे सदा रक्षा अपने देश की हम...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध

कक्षा- 5 पाठ- 01 (वन्दे सदा स्वदेशम् भाग- 2)

तर्ज- - बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम

गीत- करते हैं वन्दना स्वदेश की हम

503

स्वदेश वन्दना

करते हैं वन्दना स्वदेश कि हम,
करेंगे सदा रक्षा अपने देश की हम...2

तिरंगा हमारे देश का,
राष्ट्रीय ध्वज है कहलाता।
त्याग और बलिदान का,
सदा हमको पाठ पढ़ाता।।
समर्पित रहेंगे सदा,
अपने देश के प्रति हम..2

करते हैं वन्दना स्वदेश कि हम,
करेंगे सदा रक्षा अपने देश की हम...2

विभिन्न धर्मो के लोग यहाँ,
मिल जुल कर रहते।
अनेकता में एकता का,
सुन्दर सन्देशा हैं देते।।
करेंगे गुणगान सदा,
अपने देश का हम...2

करते हैं वन्दना स्वदेश कि हम,
करेंगे सदा रक्षा अपने देश की हम...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 5 पाठ- 01 (वन्दे सदा स्वदेशम् भाग- 3)
तर्ज- - बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम
गीत- करते हैं वन्दना स्वदेश की हम

504

स्वदेश वन्दना

करते हैं वन्दना स्वदेश कि हम,
करेंगे सदा रक्षा अपने देश की हम...2

दिल्ली हमारे देश की है राजधानी,
बड़ी सुन्दर है संस्कृति की कहानी।
देश हमारा लोकतन्त्र कहलाता,
अधिकार और कर्तव्य हमको सीखता।।

समर्पित रहेंगे सदा,
अपने देश के प्रति हम..2

करते हैं वन्दना स्वदेश कि हम,
करेंगे सदा रक्षा अपने देश की हम...2

अनेकों हैं भाषाएँ यहाँ पर,
राष्ट्रभाषा हिन्दी है हमारी।
अपने देश के विकास के लिए,
पूर्ण समर्पित हैं हम।।

करते हैं वन्दना स्वदेश कि हम,
करेंगे सदा रक्षा अपने देश की हम...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलय (हिन्दी)
कक्षा- 02 पाठ- 18 (परी भाग- 1)
तर्ज- - आओ सुनाऊँ प्यार की एक
गीत- आओ सुनाऊँ बच्चों तुमको

505

प्यारी परी और मधुमक्खी

आओ सुनाऊँ बच्चों तुमको,
परियों की कहानी।
एक थी परी करती रहती,
दिनभर मनमानी...2

जाड़े के दिन भी अब,
प्यारे-प्यारे आने लगे थे।
रंग-बिरंगे फूल धरती पर
अब सजने लगे थे।

प्यारी परी भी धरती पर,
फूलों को देखने आयी थी।
तितली और मधुमक्खी से,
खेलने की जिद करने लगी थी।।

आओ सुनाऊँ बच्चों तुमको,
परियों की कहानी।
एक थी परी करती रहती,
दिनभर मनमानी...2

आओ सुनाऊँ बच्चों तुमको,
परियों की कहानी,
एक थी परी करती रहती,
दिनभर मनमानी...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद **गीतांजलि सृजन**

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलय (हिन्दी)
कक्षा- 02 पाठ- 18 (परी भाग- 2)
तर्ज- - आओ सुनाऊँ प्यार की एक
गीत- आओ सुनाऊँ बच्चों तुमको

506

प्यारी परी और मधुमक्खी

आओ सुनाऊँ बच्चों तुमको,
परियों की कहानी।
एक थी परी करती रहती,
दिनभर मनमानी...2

मधुमक्खी अभी खेलने से,
मना करने लगी थी।
छत्ते में शहद भरना है बाकी,
परी से ये कहने लगी थी।।

आओ सुनाऊँ बच्चों तुमको,
परियों की कहानी।
एक थी परी करती रहती,
दिनभर मनमानी...2

परी ने जादू से छत्ते में,
पूरा शहद भर दिया था।
मधुमक्खी का काम,
परी ने आसान कर दिया था।
अब सब मिलकर एकसाथ,
खेल खेलने लगे थे।

आओ सुनाऊँ बच्चों तुमको,
परियों की कहानी...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलम (हिन्दी)

कक्षा- 02 पाठ- 01 (जिसने सूरज चाँद बनाया भाग- 1)

तर्ज- साजन मेर उस पार है।

गीत- ईश्वर ने यह संसार बनाया है।

507

ईश्वर का संसार

ईश्वर ने यह संसार बनाया है,
प्रकृति के कण-कण को सजाया है..2

चाँद, तारे और सूरज ईश्वर ने बनाए हैं,
उनकी कृपा से सब जगमगाए हैं।
प्रकृति के अद्भुत यह नजारे हैं,
लगते हम सबको बहुत प्यारे हैं।।

ईश्वर ने यह संसार बनाया है,
प्रकृति के कण-कण को सजाया है..2

फूलों में खुश्बू जब आती है,
अपनी सुगन्ध से धरती को महकाती है।
नदिया पर्वत सभी ईश्वर ने बनाए हैं,
धरती के सारे भाग सजाए हैं।।

ईश्वर ने यह संसार बनाया है,
प्रकृति के कण-कण को सजाया है..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलम (हिन्दी)

कक्षा- 02 पाठ- 01 (जिसने सूरज चाँद बनाया भाग- 2)

तर्ज- साजन मेर उस पार है।

गीत- ईश्वर ने यह संसार बनाया है।

508

ईश्वर का संसार

ईश्वर ने यह संसार बनाया है,
प्रकृति के कण-कण को सजाया है..2

सूरज जब सुबह को आते है,
किरणों को चारों ओर बिखराते है।
चिड़िया भोर में चहचहाती हैं,
खुशियों के मंगल गीत गाती हैं।।

ईश्वर ने यह संसार बनाया है,
प्रकृति के कण-कण को सजाया है..2

ईश्वर ने वृक्षों से किया धरती का श्रृंगार है,
हमारा जीवन ईश्वर का उपहार है।
उनकी कृपा से यह संसार है,
हम सब पर उनका ही उपकार है।।

ईश्वर ने यह संसार बनाया है,
प्रकृति के कण-कण को सजाया है..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 03 पाठ- 07 (एहि-एहि वीर रे भाग -01)

509

तर्ज- - ए मालिक तेरे बन्दे हम
गीत- आओ वीरो को करें हम नमन

वीर सैनिक

आओ वीरों को करें हम नमन,
देश की रक्षा करते जो हरदम।
सरहदों पर जाते, सर्दी-गर्मी सह जाते,
अपना फर्ज निभाते हरदम...2

सीमा पर रात-दिन वो खड़े,
मन में अटूट देश प्रेम भरे।
करके रक्षा देश की, निभाते अपना फर्ज,
ताकि अमन चैन से रह सके हम।।

आओ वीरों को करें हम नमन,
देश की रक्षा करते जो हरदम।
सरहदों पर जाते, सर्दी-गर्मी सह जाते,
अपना फर्ज निभाते हरदम...2

तूफान आये कितना भी राहों पर,
रखते सीमाओं पर हर पल नजर।
हमेशा आगे बढ़ते, देश की रक्षा करते,
हम सब उनका करें वन्दन।।

आओ वीरों को करें हम नमन,
देश की रक्षा करते जो हरदम।
सरहदों पर जाते, सर्दी-गर्मी सह जाते,
अपना फर्ज निभाते हरदम...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 03 पाठ- 07 (एहि-एहि वीर रे भाग -02)
तर्ज- - ए मालिक तेरे बन्दे हम
गीत- आओ वीरों को करें हम नमन

510

देश के सैनिक

आओ वीरों को करें हम नमन,
देश की रक्षा करते जो हरदम।
सरहदों पर जाते, सर्दी-गर्मी सह जाते,
अपना फर्ज निभाते हरदम...2

हौंसले उनके पर्वतों से बड़े,
सरहदों पर वो रात-दिन खड़े।
जब वह अपने कदम बढ़ाते,
दुश्मन के मनोबल हिल जाते।।

पल भर मे कर देते,
सारे दुश्मनों को खत्म।

बाजी लगाते अपने जान की,
ताकि देश में हो अमन शान्ति।
देश की रक्षा करते हर मुश्किल से लड़ते,
शान से तिरंगा लहराते हर दम।।

आओ वीरों को करें हम नमन,
देश की रक्षा करते जो हरदम।
सरहदों पर जाते, सर्दी-गर्मी सह जाते,
अपना फर्ज निभाते हरदम...2

आओ वीरों को करें हम नमन,
देश की रक्षा करते जो हरदम।
सरहदों पर जाते, सर्दी-गर्मी सह जाते,
अपना फर्ज निभाते हरदम...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 05 पाठ- 16 (काकस्य उद्यम: भाग -01)
तर्ज- चाहा है तुझको चाहेंगे हरदम
गीत- जंगल मे एक कौआ

511

प्यासा कौवा

जंगल में एक कौवा,
बड़ा ही प्यासा था।
प्यास थी इतनी ज्यादा,
कि वह हो रहा व्याकुल था।।..2

पानी की खोज में वह,
इधर-उधर जा रहा था।
पर पानी उसको कहीं भी,
नजर नहीं आ रहा था।
पास का तालाब भी पूरा,
सूखा और खाली था।

जंगल में एक कौवा,
बड़ा ही प्यासा था।
प्यास थी इतनी ज्यादा,
कि वह हो रहा व्याकुल था।।..2

तभी नजर कौवे की,
एक घड़े पर पड़ती है।
उसमें पानी देख कर,
कौए की आश जगती है।।

जंगल में एक कौवा,
बड़ा ही प्यासा था।
प्यास थी इतनी ज्यादा,
कि वह हो रहा व्याकुल था।।..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध

कक्षा- 05 पाठ- 16 (काकस्य उद्यम: भाग -02)

तर्ज- चाहा है तुझको चाहेंगे हरदम

गीत- जंगल मे एक कौआ

512

प्यासा कौवा

जंगल में एक कौवा,
बड़ा ही प्यासा था।
प्यास थी इतनी ज्यादा,
कि वह हो रहा व्याकुल था।।..2

पर उस घड़े में बहुत,
थोड़ा सा ही पानी था।
घड़े के उसी पानी से,
कौए को प्यास बुझाना था।।

जंगल में एक कौवा,
बड़ा ही प्यासा था।
प्यास थी इतनी ज्यादा,
कि वह हो रहा व्याकुल था।।..2

कौवे ने पानी पीने के लिए,
अपनी अकल लगायी।
अचानक से उसके मन में,
एक उत्तम युक्ति आयी।।

जंगल में एक कौवा,
बड़ा ही प्यासा था।
प्यास थी इतनी ज्यादा,
कि वह हो रहा व्याकुल था।।..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान | शिक्षक का सम्मान | मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध

कक्षा- 05 पाठ- 16 (काकस्य उद्यम: भाग -03)

तर्ज- चाहा है तुझको चाहेंगे हरदम

गीत- जंगल मे एक कौआ

513

प्यासा कौवा

जंगल में एक कौवा,
बड़ा ही प्यासा था।
प्यास थी इतनी ज्यादा,
कि वह हो रहा व्याकुल था।।..2

कौआ छोटे-छोटे कंकड़,
अपनी चोंच में ला रहा था।
फिर एक-एक करके कंकड़ को,
कौआ घड़े में डाल रहा था।।

जंगल में एक कौवा,
बड़ा ही प्यासा था।
प्यास थी इतनी ज्यादा,
कि वह हो रहा व्याकुल था।।..2

धीरे-धीरे घड़े का पानी,
ऊपर आता जाता है।
कौवा पानी पीकर के,
अपनी प्यास बुझाता है।।

जंगल में एक कौवा,
बड़ा ही प्यासा था।
प्यास थी इतनी ज्यादा,
कि वह हो रहा व्याकुल था।।..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

शिक्षा का उत्थान | शिक्षक का सम्मान | मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- संस्कृत सुबोध
कक्षा- 03 पाठ- 12 (विद्या)
तर्ज- झिलमिल सितारों का आँगन होगा
गीत- ज्ञान का दीप जलाना होगा

514

विद्या

ज्ञान का दीप जलाना होगा,
अज्ञानता को मिटाना होगा।
तब जाकर हम सबका,
जीवन सुख में होगा।।..2

विद्या से व्यक्ति के मन में,
विनम्रता का भाव आता है
घमण्ड मिट जाता सारा,
समरसता का भाव आता है।।

विद्या से सबके जीवन में,
सुख समृद्धि आती है।
व्यक्ति के व्यक्तित्व को,
विद्या ही महान बनाती है।।

विद्या को जीवन में अपनाना होगा,
जन-जन को उसका महत्व बताना होगा।

शिक्षा का प्रकाश फैलाना होगा,
सबको शिक्षित बनाना होगा।

ज्ञान का दीप जलाना होगा,
अज्ञानता को मिटाना होगा।
तब जाकर हम सबका,
जीवन सुख में होगा।।..2

ज्ञान का दीप जलाना होगा,
अज्ञानता को मिटाना होगा।
तब जाकर हम सबका,
जीवन सुख में होगा।।..2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह- जुलाई 2024

विषय- किसलय (हिन्दी)

कक्षा- 02 पाठ- 19 (हमारे राष्ट्रीय प्रतीक)

तर्ज- आओ बसाएँ मन मन्दिर में

गीत- हर देश की अपनी एक

515

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

हर देश की अपनी एक,
होती अलग पहचान है।
कुछ चिन्ह और प्रतीक है,
जो बन जाते देश की शान है।।...2

तीन रंग से सजा तिरंगा,
हमारा राष्ट्रीय ध्वज कहलाता है।
सबसे सुन्दर फूल कमल,
राष्ट्रीय फूल माना जाता है।।

राष्ट्रीय पक्षी मोर हमारा,
पंखों में सतरंगी रंग सजाता है।
सिंह आकृति वाला अशोक स्तम्भ,
राष्ट्रीय चिन्ह कहलाता है।।

हमारे देश का राष्ट्रीय पशु,
शक्तिशाली बाघ माना जाता है।
एकता, अखण्डता का पाठ,
हमारा देश सबको पढ़ाता है।।

हर देश की अपनी एक,
होती अलग पहचान है।
कुछ चिन्ह और प्रतीक है,
जो बन जाते देश की शान है।।...2

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात